समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

महाकौशल–संदेश

RNI No. MPHIN/2001/11140

वर्षः– 2019–20 पृष्ठः– 4 अंक :– 14 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

लोकतंत्र की मजबूती का मंत्र 'एक देश एक चुनाव' – डॉ. किशन कछवाहा

देश के दूरदर्शी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संविधान की मंशा के अनुरूप 'एक देश एक चुनाव' की बात कही है। इससे जनता की आकाँक्षाओं को पूरा करने में मदद मिलेगी। यह प्रधानमंत्री का एजेन्डा भी नहीं है। वे चाहते हैं कि इस मुद्दे पर देश के सभी दलों के नेताओं के साथ चर्चा हो। इस हेतु देश की 41 पार्टियों को निमंत्रण भी भेजा गया जिसमें 14 विपक्षी दलों ने उपस्थित न रहकर एक किस्म से किनारा ही कर लिया। इन किनारा करके नकारात्मक संदेश देने वालों में वे दल भी शामिल रहे, जिन्होंने पूर्व में नीति आयोग, चुनाव आयोग तथा संविधान समीक्षा आयोग की इसी राय पर सहमति व्यक्त की थी। उनका अनुपस्थित रहना, हैरान करने वाला रवैया था। ये दल विधि आयोग के इसी प्रकार के सुझाव का समर्थन कर चुके हैं।

19 मई को प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में चार घंटे तक चली इस बैठक में एक कमेटी बनाने का प्रस्ताव पारित किया गया जो इस मामले से जुड़े पहलुओं का अध्ययन कर रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी। इस बैठक में 'एक देश एक चुनाव' के विषय के अलावा महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती से जुड़े कार्यक्रमों की तैयारियों और सन् 2022 में भारत की आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर होने वाले आयोजनों के रूप को लेकर भी सभी दलों के नेताओं के साथ चर्चा हुयी।

इस तथ्य से कोई इंकार नहीं कर सकता कि चुनावी प्रणाली अत्यधिक खर्चीली होती चली जा रही है। बार–बार चुनाव होने से सरकारी खजाने को भारी बोझ उठाना पड़ता है। लगभग हर बार 45 हजार करोड़। यह राशि देश की जनता की गाढ़ी कमाई की रकम है जिसका अधिकतम उपयोग देश के विकास में ही होना चाहिए। इस मर्म को समझा जाना चाहिए। सुशासन केवल फाईलों तक सिमटी हुयी योजनाओं से सुनिश्चित नहीं होता बल्कि उन योजनाओं के कुशलता पूर्वक क्रियान्वयन से सम्भव होता है।

अपने देश में विरोध के लिये विरोध करने की मानसिकता गहराई से काम कर रही है। सत्तारूढ़ दल का विरोध? सत्तारूढ़ दल द्वारा जब भी कोई नया सुझाव जनहित में लाया जाता है, तब भी विपक्ष की यही सोच होती है कि वह उनके अपने हितों को साधने के लिये लाया गया होगा। अतः विरोध। यह 'एक देश–एक चुनाव' वाला प्रस्ताव संविधान की आत्मा से निकला हुआ प्रस्ताव है–यह बिल्कुल भी नया नहीं है। सन् 1952 से 1967 तक इसी आधार पर चुनाव सम्पन्न होते रहे हैं। यह तो प्रधानमंत्री की साफ–सुथरी सोच का परिचायक है कि वे लोकतंत्र के मूल और व्यवहार के पक्ष को क्रियांवित करने में जुट गये हैं। विपक्ष ने बैठक का बहिष्कार कर या अनुपस्थित रहकर अपनी नकारात्मक राजनीति को ही प्रगट किया है। देश की जनता जागरूक है, उसने विगत चुनावों में अपनी जागरूकता का परिचय देकर राजनीति के पंडितों के गणित का बिगाड़ दिया है। इस बहिष्कार या अनुपस्थिति से जनता में सीधा संदेश गया है कि ये दल अपने निहित दलीय स्वार्थों के कारण एक साथ चुनाव कराने के पक्ष में नहीं है। इन चुनावों में किस प्रकार सरकारी–गैर सरकारी धन की बर्बादी होती है, कितना समय, कितना श्रम बर्बाद जाता है–क्या यह किसी से छिपा है? कालाधन का प्रभाव–यह तो एक अलग महापाप है। जिसको देश लम्बे समय से भुगत रहा है। चुनाव की सूचना जारी होते ही आचार संहिता लागू हो जाती है उस समय सब जरूरी काम रोक दिये जाते हैं, विकास कार्य भी रूक जाते हैं।

बहरहाल बैठक में शामिल होने वाले दलों ने इस मुद्दे का समर्थन किया। भाकपा–माकपा की राय भिन्न थी लेकिन उन्होंने विरोध भी नहीं किया। उधर वीजद नेता और उड़ीसा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने अपना और अपनी पार्टी का समर्थन जताया। भाजपा, शिवसेना, वाई एस.आर. काँग्रेस, बीजेडी, जेडीयू, लोजपा, अपना दल, आजसु आदि ने भी समर्थन किया।

इस मामले में पूर्व में सम्पन्न हुयी कतिपय गतिविधियों पर नजर डालें तो पता चलता है कि सन् 1983 में चुनाव आयोग ने, सन् 1995 में न्यायमूर्ति वी.पी. जीवन रेड्डी की अध्यक्षता वाले लॉ–कमीशन ने लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराये जाने की सिफारिश की थी। विधि आयोग भी इस तरह के सुझाव दे चुका है।

बार–बार समय–बेसमय चुनाव होने से धन, समय, मानवशक्ति, विकास को नुकसान तो पहुंचता ही है। इससे हटकर भी लोकतंत्र की बेहतरी के हिसाब से चिन्तन करने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। ये चुनाव लोकतंत्र को मजबूत बनाते हैं। प्रश्न यह भी है कि जब विधानसभाओं के चुनाव (ओड़ीसा, आन्ध्रप्रदेश, सिक्किम और अरूणाचल आदि) लोकसभा चुनावों के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सकते हैं तो बाकी विधानसभाओं के क्यों नहीं?

आज इस दिशा में चिन्तन करना इसलिये भी आवश्यक हो गया है, भ्रष्टाचार ने अपनी जड़े गहराई से जमा ली है, अपराधियों का राजनीतिकरण और राजनीतिज्ञों का अपराधीकरण मजहबवाद चार कदम आगे बढ़ा है, अनैतिकता, कामचोरी ने अपने पंख फैलाये हैं, जातिवादी राजनीति अपने पैर पसारे हुये है। इन सब ने लोकतंत्र को दागी बनाने में कोई कोर–कसर छोड़ नहीं रखी है। कब जागेंगे हम? इसका एकमात्र उपाय है 'लोकतंत्र की रक्षा'। टुकड़ों–टुकड़ों में इसका हल क्या कारगर सिद्ध होगा? यह गम्भीर विषय है–इस पर जितनी जल्दी हो सके चिन्तन कर प्रभावी कदमों के साथ आगे बढ़ने की जरूरत है। लोकतंत्र को साफ–सुथरा बनाये रखने के लिये भी लोकसभा–विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराये जाने की जरूरत है। लॉ–कमीशन भी अपनी 170वीं रिपोर्ट में इसका उल्लेख कर चुका है।

बढ़ती आबादी की बढ़ती समस्यायें

आजादी मिलने के बाद भारत की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुयी है। उस समय तीस करोड़ की आबादी थी और अब एक सौ तीस करोड़ पर जा पहुँची है। ईमानदारी के साथ सरकार130 करोड़ देशवासियों के लिये विभिन्न प्रकार की योजनाओं का क्रियान्वित कर उन्हें आगे बढ़ा रही है। लेकिन आबादी इसी गति से बढ़ती चली गयी तो बुनियादी जरूरतों को पूरा करना कितना मुश्किल होगा? आज हम सब पानी की कमी को एक मुसीबत के रूप में देखने लगे हैं। ऐसा दिन भी संभावित है जब हमें इस कठिनाई से जूझना पड़ें।

बढ़ती जनसंख्या के साथ–साथ धरती की गर्माहट भी तो बढ़ती जा रही है। जो सक्षम है, वे ए.सी–एयर कंडीशनर खरीद लेते हैं, उससे उनके कमरे तो ठंडे रहते हैं, लेकिन गरम हवा बाहर निकलकर तापमान को बढ़ाने में सहायक हो जाती है। लाखों लोग प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में वाहन खरीदते हैं। वाहन सड़कों पर चलेंगे तो उससे निकलने वाली कार्बन–योनो–ऑक्साईड भी निकलकर बाहरी तापमान को बढ़ाने में अपना योगदान देती है। ये सब ऐसा ही चलता रहेगा तो परेशानियाँ तो बढ़ती ही जायेंगी।

जय श्रीराम बना नवयुग का वन्दे मातरम्

दिवंगत आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री कार सेवक राम भक्त थे। जय श्रीराम उनके अधरों पर रहता था। तब मुलायम सिंह यादव ने जय श्रीराम पर ही प्रतिबंध लगा दिया था और कुछ घटनाओंमें अर्थी ले जा रहे शोकाकुल हिन्दुओं द्वारा 'राम नाम सत्य है' कहने पर भी पुलिस कार्यवाही हुई– ऐसे समाचार छपे थे।

लेकिन जिस अयोध्या के बारे में कहा गया कि मुलायम सिंह सरकार ने इतनी जबरदस्त पुलिस नाकाबंदी कर दी है कि 'परिन्दें भी पर न मार सकें'–वहां बाबरी ढांचा ढहा और कार सेवकों ने अपनी शहादत दी।

बंगाल ही नहीं, समस्त सेकुलर जगत में जय श्रीराम भड़काने वाला अस्वीकार्य उद्घोष वैसे ही माना जाता है, जैसे अहंकारी और हिन्दू कारसेवकों पर गोलियाँ चलवाने से न हिचकने वाले मुलायम सिंह के समय था अथवा आजादी के समय वन्देमातरम् था।

नारे सिर्फ शब्द नहीं होते। उनके पीछे इतिहास, भूगोल, दर्द, शहादत, जिद, लक्ष्य और लक्ष्य के प्रति असंदिग्ध निष्ठा होती है।

वन्दे मातरम् मात्र भारत माता की अभ्यर्थना का द्विशब्दी मंत्र नहीं था। उसके पीछे भाव था स्वदेशी, स्वधर्म और स्वत्व का। राष्ट्र तथा राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना के प्रति स्वाभिमान का। वन्दे मातरम् का उद्घोष करते ही, उसके उद्घोषक का पूरा पता, परिचय, आनुवांशिकी का विवरण संप्रेषित हो जाता था।

मादाम भीकाजी कामा द्वारा बनाए गए भारत के प्रथम राष्ट्रीय ध्वज के मध्य 'वन्दे मातरम्' लिखा हुआ था। वह 'वन्दे मातरम्' भारत के उस भूगोल का परिचायक था जिसे स्वतंत्र होना था और उस इतिहास का प्रतीक था जो संघर्ष, प्रतिरोध, जय–विजय, केसरिया बलिदान और अविजेय आत्म शक्ति के रंगों से रंगा था।

इसलिये अंग्रेज वन्दे मातरम् से डरते थे।

जय श्रीराम से चिढ़ का भी कारण है–और जो सेकुलर जय श्रीराम से चिढ़ते हैं–उसकी तर्कसंगत वजह है। ममता दीदी ने ठीक कहा–उन्हें जय श्रीराम से तकलीफ नहीं, बल्कि जिस तरह से उपयोग किया जाता है, उससे चिढ़ है।

जय श्रीराम का उद्घोष करने वाला यह तय करके उद्घोष करता है कि परिणाम चाहे जो हो, वह उसके लिए तैयार है। उसे मालूम है 'जय श्रीराम' कहने पर सेकुलर तामसी ताकतें समझ लेंगी 1. वह धारा 370 हटाना चाहता है 2. राम मंदिर का भव्य निर्माण चाहता है 3. समान नागरिक संहिता का पक्षधर है 4. हिन्दुत्व उसका प्राण है 5. वह मुस्लिम तुष्टीकरण विरोधी है 6. वह गोहत्या का विरोधी है 7. वह संस्कृत भाषा का समर्थक और भारत की अन्य सभी भाषाओं के प्रति समान–सम्मान का भाव रखता है। 8. वह कश्मीर में धारा 370 और दो झंडों का विरोधी है। 9. कश्मीरी हिन्दुओं की ससम्मान सुरक्षित वापसी का समर्थक है 10. वह नक्सली–माओवादी हिंसा के निर्मूलन का कठोर हिमायती है 11. वह शासन–प्रशासन–राजनीति में भारतीयता की चेतना का समावेशी है 12. वह शासन–प्रशासन राजनीति में भ्रष्टाचार के अंत का योद्धा है 13. वह दुश्मन को ईंट का जवाब पत्थर और लोहे से देने का पक्षधर है 14. वह जिहादी– कम्युनिस्ट– मतांध मुस्लिमों की दुरभिसंधि में फंसे हिन्दुओं को मुक्त कराने का प्रबल पक्षधर है 15. वह हिन्दू धर्म के प्रति क्षमाबोध नहीं बल्कि गर्व का भाव रखता है 16. वह सशस्त्र सेनाओं के प्रति शिखर सम्मान का भाव रखता है और सेना विरोधियों को करारा जवाब देने का साहस रखता है 17. उसकी आंखों में विश्व समुदाय में एक सशक्त, स्वाभिमानी भारत के अग्रिम पंक्ति में खड़े होने का सपना है। 18. वह स्वभाषा, स्वसंस्कृति, स्वदेशी वाला है–अंग्रेजियत का विरोध है। 19. वह गोरक्षा चाहता है 20. वह धर्म से समझौता किए बिना संविधान,लोकतंत्र और बहुलतावाद का समर्थक है।

जय श्रीराम, वन्दे मातरम् की तरह नारा नहीं, वरन् उस व्यक्ति का आताल–पाताल तक का सम्पूर्ण परिचय, उसकी मनोवृत्ति और उसके जीवनध्येय के करोड़ों शब्दों की दो शब्दों में जिप–ड्राइव है–भाष्य करने वाले अनेक पुस्तकें केवल उस 'जय श्रीराम' के निहितार्थों पर ही लिख सकते हैं।

जो हार, अकाल घटनाओं, कार्यक्रम तथा स्वप्नों की बंदनवार से डरते हैं, जो भारत के दर्पण में अपनी छवि देखने से डरते हैं, उनका कहना है, 'जय श्रीराम' एक खतरनाक उद्घोष है।

फिर क्या डरना?

ममता दीदी का जय श्रीराम के उद्घोष से डरना लाजिमी है। यह उद्घोष उस मति भ्रमित अहंकारी सत्ता के अंत का आरम्भ है, जो मुहर्रम पर अवकाश और दुर्गा पूजा विसर्जन पर प्रतिबंध लगाती है। जो विरोधी घुसपैठियों को अपना मानती है और स्वदेशी बांधवों को 'बाहरी' घोषित करती है। जय श्रीराम से उनका सबका डरना जरूरी है जो भारत की काया और मन को क्षत–विक्षत करने में हिचकते नहीं और जिसके लिए हिन्दू धर्म पर अभिमान खतरनाक काम है।

जय श्रीराम आनन्दमठ के नवीन संस्करण का वन्दे मातरम् इसीलिए है और इसीलिए हमने अपने सामान्य अभिवादन में सिर्फ जय श्रीराम बोलना शुरू कर दिया है। जय श्रीराम।

आदर्श महिलाएँ

हर महिला के कार्य करने का ढंग अनोखा होता है, लेकिन हमारे आस–पास ऐसी न जाने कितनी सफल व श्रेष्ठ गुणों से युक्त महिलाएँ होती हैं, जो अपने कार्यों को सर्वश्रेष्ठ स्तर का करती हैं। जब कोई उनसे मिलता है, तो वह उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता। ऐसी महिलाएँ अपने जीवन में सफलता के नए सोपानों पर निरंतर कदम बढ़ाती हैं और जीवन में न सिर्फ स्वयं आगे बढ़ती हैं, बल्कि अपने साथ औरों को भी आगे बढ़ने की सीख देते हुए उन्हें भी आगे बढ़ाती हैं।

हालांकि सभी के जीवन का लक्ष्य व जीवन जीने का अंदाज एक दूसरे से पृथक है; क्योंकि सफलता बहुत हद तक व्यक्तिपरक होती है। कुछ लोग बदलाव से दूर भागते हैं तो वहीं कुछ लोग उसमें नई संभावनाएँ तलाश लेते हैं, जो उन्हें भीड़ से अलग पहचान देता है। आदर्श व श्रेष्ठ महिलाएँ ऐसी ही होती हैं, जो भीड़ में मौजूद होने पर भी अपने कार्यों व लक्षणों के कारण सबसे अलग दिखती हैं, ठीक उसी तरह जैसे आकाश में अनन्त तारों के बीच चंद्रमा विशेष दिखता है और धरती तक अपनी चाँदनी बिखेरता है।

आदर्श व श्रेष्ठ महिलाओं के कार्य करने का ढंग अलग होता है। ये कुछ विशिष्ट क्षमताओं की धनी होती हैं, जो सभी के बीच लोकप्रिय होने के साथ–साथ अपनी जिंदगी से जुड़ी हर बात जानती हैं, जैसे–वे क्या बनना चाहती हैं, उनके जीवन का लक्ष्य क्या है आदि। इनका हर कार्य ऊर्जा से भरपूर होता है और इनमें सामंजस्य का विशेष गुण होता है। ये अपने घर व नौकरी के बीच संतुलन बैठाना भी अच्छे से जानती है।

अधिकतर लोगों को नए कार्य करने में घबराहट होती है, मन में डर–सा लगता है कि नया कार्य किस तरह का होगा, कैसे होगा, कैसे उसकी शुरूआत करेंगे? लेकिन आदर्श महिलाएँ सदैव आत्मविश्वास से भरी हुई होती हैं। नई नौकरी हो या नए लोगों से मिलना–जुलना हो, ये हर कार्य पूरी लगन व आत्मविश्ववास के साथ करती हैं।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है, प्रकृति में परिवर्तन हर पल घटित होते हैं, उसी तरह श्रेष्ठ व उत्कृष्ट महिलाएँ कभी भी एक ही तरह से कार्य नहीं करतीं, बल्कि उसमें बदलाव लाकर कार्य करती हैं, परिवर्तन से वे कभी भी घबराती

शेष भाग पृष्ठ क्र. 3 पर

बलूचिस्तान में आजादी की गूंज

पाकिस्तान की सियासी दहशतगर्दी और रोजाना लापता होते अपनों को देखने के बाद भी मुल्क की आजादी के लिए बलूचिस्तान के लोग क्या–कुछ कर रहे हैं, कैसे कर रहे हैं और किस हौसले से कर रहे हैं, यह काबिले गौर है। बेशक क्वेटा जैसे शहरी इलाके में पाकिस्तान के जुल्मों के खिलाफ बैनर लहराना मुमकिन हो, बाकी इलाकों में इसके बारे में सोचा भी नहीं जा सकता। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि संगीन के साये ने इन इलाकों में आजादी की ख्वाहिश को खत्म कर दिया है, बल्कि हकीकत यह है कि यह और तेज हुई है। अभी 27 मार्च को कई तंजीमों ने बलूचिस्तान के दूर–दराज के इलाकों में छोटे–छोटे समूह में लोगों को इकट्ठा करके उन्हें बताया कि उनकी रवायत क्या है, उनकी तारीखी हकीकत क्या है, उनके लिए आजादी क्यों जरूरी है।

बलूचिस्तान के लोगों के लिए 27 मार्च ऐसा दिन है जिसे वे कभी भूल नहीं सकते। 27 मार्च, 1948 को पाकिस्तान की फौज ने कलात पर हमला कर उस पर कब्जा कर लिया था। उस दौरान पाकिस्तानी सेना से मुकाबला करते हुए 15 से 20 हजार बलूच शहीद हो गये थे। तभी से बलूच इसे काला दिन की तरह मनाते हैं। दुनिया के तमाम देशों में बसे बलूच इस दिन जुलूस निकालते हैं, लोगों को बताने की कोशिश करते हैं कि बलूचिस्तान में कैसे बुनियादी इंसानी हकूक की अनदेखी हो रही है, यहां सियासी सरपरस्ती में कैसे दहशतगर्दी फैलाई जा रही है। जैसा इस बार यूनान, जर्मनी वगैरह में हुआ। इस बार की खास बात यह रही कि बलूचिस्तान की तमाम तंजीमों, खास पर बलूचिस्तान की तमाम तंजीमों, खास तौर पर बलूचिस्तान स्टूडेंट ऑर्गनाइजेशन (आजाद) और बलूचिस्तान नेशनल मूवमेंट ने बलूचिस्तान के दूर–दराज के इलाकों में लोगों को इस बात से अवगत कराया कि उनकी रवायती सलाहियतें क्या हैं, उनकी तारीखी हकीकत क्या है, उनके लिए कौमी आजादी क्यों जरूरी है। इस रपट को तैयार करने के लिए यह संवाददाता ऐसे कई कार्यक्रमों में शामिल हुआ। अवारान के मश्कई में ऐसे ही एक कार्यक्रम में बलूचिस्तान स्टूडेंट ऑर्गनाईजेशन (बीएसओ) आजाद की ओर से एक कार्यक्रम दोपहर में हुआ। जब वहां पहुंचा तो बीएसओ (आजाद) का नुमाइंदा करीब 25 लोगों से मुखातिब था। मुझे देख उसने इंतजार करने का इशारा किया और अपनी बात करने का इशारा किया और अपनी बात करने लगा। तब तक मैंने कुछ तस्वीरें उतार लीं। थोड़ी देर में वह मेरे सामने था। मैंने सवाल किया कि वे इन लोगों को क्या बता रहे हैं। जवाब में उसने कहा, आप तो बाखबर हैं कि क्या हो रहा है..... हममुल्क हैं..... लगता है कोई रिपोर्ट बना रहे हैं.....। खैर, ''हमारा मानना है कि दुनिया की कोई भी कौम तब तक आजाद नहीं रह सकती. .... या हो सकती..... जब तक उसे अपनी रवायतों और तारीख का इल्म न हो। यहां हम इन लोगों को यही सब बता रहे हैं। हमेशा चलने वाले कार्यक्रम से यह इसलिए अलग है कि यह एक खास मौके पर हो रहा है। सुवह से यह तीसरा दौर है।'' बलूचिस्तान में इस तरह की बैठक इसलिए जरूरी है कि यहां की आबादी के ज्यादातर हिस्से को तालीम हासिल नहीं। ऐसे अनेक परिवार हैं जिनके बच्चे इसलिए तालीम नहीं हासिल कर पा रहे क्योंकि कमाने वाला पाकिस्तानी फौज के हाथों गायब कर दिया गया।

इसके बाद हमने रूख किया अवारान की ही जाहू तहसील में चल रहे ऐसे ही एक कार्यक्रम की ओर। वहां का नजारा भी कुछ अलग नहीं था। हां, एक बात अलग थी कि यहां सिर्फ महिलाएं थीं। ऐसे कार्यक्रम में सामने से तस्वीर खींचने की इजाजत नहीं होती सो पीछे से तस्वीर उतारी। फिर बाहर निकल आया। थोड़ी देर में उनका प्रशिक्षक बाहर निकला तो बातचीत का मौका मिला। उसने आते ही कहा, ''इन चित्रों को कहीं भेजते समय इस बात का ख्याल रखेंगे कि किसी की भी पहचान जाहिर न हो.....'' मैंने सिर हिलाकर हां कहा और वही सवाल किया–क्या बता रहे हैं? जबाव अंदाजे से कुछ अलग मिला। उसने कहा, ''पंजाबी भेड़ियों के सामने इन्हें कैसे छोड़ दें? उन्होंने क्या हाल कर रखा है, सब जानते हैं। महिलाओं–बच्चों की हिफाजत करना हमारी नस्ली जिम्मेदारी है. ..तारीख गवाह हे कि बलूच महिलाओं की इज्जत करने वाली कौम है और बढ़ते फौजी जबर के साथ हमें इनकी हिफाजत के लिए भी ज्यादा वाकिफ होना होगा। यहां इन महिलाओं को तारीखी बातें तो बताते ही हैं, साथ ही यह भी कि उन्हें महफूज रहने के लिए क्या एहतियात रखना चाहिए।'' अभी हमारी बात चल ही रही थी कि एक महिला आई और उसने जानना चाहा कि तस्वीर में कहीं उसका चेहरा तो नहीं आ गया। इससे पहले कि प्रशिक्षक कुछ कहता, मैंने उसे भरोसा दिलाया–इत्मीनान रखें, इसका ख्याल रख जाएगा। काबिले गौर है कि हाल के करीब दस साल के दौरान फौजियों और एफसी (फ्रंटियर कॉर्प्स) वालों ने बलूच महिलाओं पर जेहनी और जिस्मानी जुल्म बढ़ा दिए हैं। उनका अंदाजा है कि महिलाओं पर जुल्म बढ़ाकर बलूचों का हौसला तोड़ा जा सकता है।

पृष्ठ क्रमांक 2 का शेष भाग

नहीं, बल्कि हर स्थिति में सकारात्मक रहने के कारण ही वे लोकप्रिय होती हैं।

होने वाले परिवर्तन या बदलावों के कारण जहाँ कुछ महिलाओं में डर की भावना घर कर जाती है, तो वहीं आदर्श व श्रेष्ठ व्यक्तित्व वाली महिलाएं इनका खुले दिल से स्वागत करती हैं और नई चुनौतियों को सहज दिल से स्वीकार करती हैं। ऐसी महिलाओं में नए कार्यों में सफलता की नई संभावनाओं की आशा होती है। इनका यही गुण इन्हें नेतृत्व–क्षमता प्रदान करता है।

कार्य चाहे कैसा भी हो, लेकिन उसकी शुरूआत स्वयं करनी होती है, भले ही अन्य लोग उसमें सहयोग करें या न करें। श्रेष्ठ महिलाएँ किसी भी कार्य की शुरूआत करने में सदैव पहल करती हैं। ये अकेले होने से नहीं घबरातीं। अतः अकेले होने पर भी ये पूरे आत्मविश्वास के साथ अपने समय का सदुपयोग करती हैं। इन्हें पता होता है कि कभी–कभी आत्मविश्वलेषण करेन के लिए अकेलापन जरूरी है। यही अपने जीवन में सफलता की कुंजी है।

हार न मानने का गुण आदर्श व श्रेष्ठ महिलाओं में विशेष रूप से मौजूद होता है। नई चीजों को सीखने की ललक और बेहतर प्रदर्शन करने की चाह उनमें सदैव मौजूद रहती है। पढ़ाई में अव्वल आना हो या खेल में हिस्सा लेना हो, ये पूरी तत्परता से हर कार्य में शामिल होती हैं। यदि कोई कार्य इन्हें मुश्किल लगता हैं, तो ये उसे और अच्छी तरह से करने में विश्वास रखती हैं। इस तरह के व्यक्तित्व के कारण ये स्कूल से लेकर कार्यस्थल और घर पर यानी हर जगह सबकी प्रिय बनी रहती हैं।

कोई भी महिला चाहे तो आदर्श व श्रेष्ठ महिला के गुणों को अपने जीवन में अपना सकती है। इसके लिए उसे कुछ बातों का ध्यान रखना होगा, जैसे–वह हर स्थिति में सकारात्मक रहे, अपना हर कार्य योजनाबद्ध ढंग से करे। किसी भी व्यक्ति का आत्मविश्वास उसकी शारीरिक मुद्राओं के माध्यम से झलकता है, इसलिए अपने शरीर को स्वस्थ व सही रखना जरूरी है।

किसी भी कार्य को टालने के बजाय उसे करने की आदत डालें, समय प्रबंधन का विशेष ध्यान रखें। किसी भी समस्या को समाधान तक पहुंचाएं बिना उसे न छोड़ें। समस्या के समाधान के बहुत सारे तरीके हो सकते हैं, लेकिन जो सबसे श्रेष्ठ व हितकारी तरीका हो, उसे ही चुनें। आत्मविश्वास व अहंकार में फरक होता है, इसलिए आत्मविश्वासी तो बनें, लेकिन अहंकारी नहीं।

अपने कार्यों के प्रति सजग रहें, प्राथमिकता के आधार पर अपने कार्य करें, लेकिन निर्धारित समय–सीमा में उन्हें पूरा करें, अन्यथा समय सीमा के बाहर किया जाने वाला अच्छे से अच्छा कार्य भी कभी–कभी निरर्थक हो

शेष भाग पृष्ठ क्र. 4 पर

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

वेद विश्व का प्राचीनतम वाङ्मय है। भारत की सनातन मान्यताओं के अनुसार वेद अपौरूषेय अथवा सर्वज्ञ स्वयं भगवान् की लोकहिताय रचना है। शास्त्रों में सम्पूर्ण वेद का धर्म के मूलरूप में आख्यान किया गया है, 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्।' उदयनाचार्य ने सम्पूर्ण वेद को परमेश्वर का निरूपक माना है। उनका कहना है–

कृत्स्न एव हि वेदोऽयं परमेश्वरगोचरः।

भट्टपाद ने वेद की वेदता इस बात में माना है कि लोकहित का जो उपाय प्रत्यक्ष अथवा अनुमान से नहीं जाना जा सकता, उसका ज्ञान वेद से होता है–

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते।
एनं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता।।

वेद की समस्त शिक्षाएँ सार्वभौम हैं। वेद भगवान् मानव मात्र को हिन्दू, सिख, मुसलमान, ईसाई, बौद्ध, जैन आदि कुछ भी बनने के लिये नहीं कहते। वेद भगवान् की स्पष्ट आज्ञा है–**'मनुर्भव'** अर्थात् मनुष्य बनो। आज हमारी मनुष्यता पाश्चात्य धूमिल संस्कृति के संसर्ग से संक्रमित हो गयी है। अहर्निश यह तथाकथित मानव समाज स्व साधन में संलग्न है। सैकड़ों वैदिक मंत्रों में भगवान् नारायण का विराट् और परम पुरूष के रूप में चित्रण किया गया है–

सहस्त्रशीर्षा पुरूषः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा ऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।

(ऋक् 10/90/1)

इस विश्व के असंख्य प्राणियों के असंख्य सिर, आँख और पैर उस विराट् पुरूष के ही सिर, आँख तथा पैर हैं। विश्व में सर्वत्र परिपूर्ण और सभी शरीरों में प्राणिमात्र के हृदय देश में विराजमान वे पुरूष निखिल ब्रह्माण्ड को सब ओर से घेरकर दृश्य–प्रपंच से बाहर भी सर्वत्र व्याप्त हैं।

अतः सर्वभूतमय ईश्वर की अवधारणा प्रगाढ़ करने के लिये ही वेदों में प्रार्थना की गयी है–**'सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।' सभी दिशाएँ मेरे मित्र हो जायँ। 'मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे'** हम सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखें–

सहृदयं सामनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाध्न्या।।

(अथर्ववेद 3/30/1)

ईश्वर ने हमें सहृदय, एक मन वाला बिना द्वेष के बनाया है। हम एक दूसरे से ऐसे स्नेह करें, जैसे गाय अपने नवजात बछड़े से करती है–

समानी वः आकूति समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

(ऋक्10/191/4)

हम सबके जीवन का लक्ष्य एक हो, हृदय और मन एक हों, ताकि मिलकर जीवन में उस एक लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

मानव धर्म का ऐसा उच्चतम, श्रेष्ठतम और वरणीय–ग्रहणीय स्वरूप अन्यत्र दुर्लभ है। वैदिक धर्म हमें सुख शान्ति, समाज में समृद्धि, सेवा भावना, सामंजस्य, सहयोग, सत्याचरण, सदाचरण, संवेदना से परिपूर्ण हृदय और मननशील मनुष्य बनने की ओर उत्प्रेरित करता है।

वेद में इसी भावना को दृढ़ किया गया है कि एक ही आत्मतत्व, प्रत्येक पदार्थ में प्रतिबिम्बित होकर भिन्न–भिन्न नाम रूपों से अभिहित हो रहा है,अतएव समग्र ब्रह्माण्ड एक ही तत्व से अधिष्ठित है। वेद–संस्कृति को वैष्णव संस्कृति इसलिये कहा गया है कि विष्णु में ब्रह्म के सभी गुणों का समावेश हो गया है–

पुरूष एवेदं सर्व यद्भूतं यच्च भाव्यम्।

(ऋक् 10/90/2)

वेद–विद्या, भारतीय संस्कृति का पहला प्रतीक है। वेद–विद्या त्रयी विद्या कहलाती है। ऋक् यजुः और साम ही त्रयीविद्या हैं। त्रयीविद्या का संबंध अग्नित्रय से है। अग्नि, वायु और आदित्य ये तीन तत्व ही विश्व में व्याप्त हैं। पुरूष ब्रह्म के तीन पैर ऊपर हैं और एक पैर विश्व है। त्रयी विद्या के समान ज्ञान, कर्म और उपासना का त्रिक वेद–विद्या का दूसरा स्वरूप है, जिसके माध्यम से वेद ब्रह्म की सत्, चित् और आनन्द–इन तीन विभूतियों की अभिव्यक्ति हो रही है। विश्व के सम्पूर्ण धर्मों का केन्द्र बिन्दु इस त्रिक में ही स्थित है। यह त्रिक और और अधिक विशिष्ट रूप में–गायत्री, गंगा एवं गौ के रूप में प्रस्फुटित हुआ है। अतः गायत्री, गंगा, और गौ के तत्व को ठीक–ठीक समझना ही वैदिक संस्कृति के मूल तत्वों को समझना है।

आत्म कल्याण के इच्छुक मानवों को धर्म के मूल स्त्रोत वेदों का अध्ययन, मनन और यथार्थ चिन्तन आत्म निष्ठा के साथ करना चाहिये।

पृष्ठ क्रमांक 3का शेष भाग

जाता है। इसलिए समय सीमा में अपने कार्यों को पूरा करने की आदत डालनी चाहिए।

कोई भी तभी अच्छे से पूरा होता है, जब उसे एक योजना के तहत पूरा किया जाए। अगर कार्य करने की योजना नहीं है, तो कार्य भी आधा–अधूरा पूरा होता है और अपूर्ण रहता है, अतः महिलाएं अपने कार्यों को योजनाबद्ध ढंग से पूरा करें, भले ही उनके पास बहुत सारे कार्य हों, लेकिन अपनी समझदारी से उन्हें प्राथमिकता के आधार पर चुनें।

समय–समय पर अपना आत्मविश्लेषण अवश्य करें। हमारे अंदर जो भी खामियाँ हैं, त्रुटियाँ हैं, आत्मविश्लेषण करने से वे हमारे समक्ष आ जाती हैं, जिन्हें स्वीकार कर हम उन्हें दूर कर सकते हैं और अपनी क्षमताओं में निखार लाकर, अपनी क्षमताएं बढ़ाकर भी अपनी खामियों व कमियों को दूर कर सकते हैं।

यदि महिलाओं में आत्महीनता, आत्मग्लानि व असुरक्षा से संबंधित मनोग्रन्थियाँ हैं, तो भी ऐसी महिलाएं सहज रूप से आगे नहीं बढ़ पातीं, अतः श्रेष्ठ व आदर्श महिला बनने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम यह है कि पहले स्वयं को ग्रंथिमुक्त करें और स्वयं के अंदर यह आत्मविश्वास पैदा करें कि हम सब कुछ कर सकते हैं। इसके उपरान्त ही महिलाएं अपने उचित प्रयासों व लक्ष्यों में सफल हो सकती हैं।

हमारे समाज में अनेक ऐसी महिलाओं के उदाहरण हैं, जो स्वयं को सामान्य स्तर से शीर्ष स्तर तक ले गईं, उन्होंने अपने जीवन में अथक श्रम किया, कभी–भी हार नही मानी और अपने अटूट विश्वास के बल पर सफलता के शिखर पर पहुंचीं, ऐसी महिलाओं से मिलकर वे उनके जीवन से प्रेरणा लेकर भी महिलाएं श्रेष्ठ व्यक्तित्व की धनी बन सकती है।

सूचना

कृपया आप अपना सुझाव महाकोशल संदेश के ई–मेल व्हाट्सअप नं. 9713223539 पर भेजें।

– सम्पादक

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा-
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com